चतुर्थ अध्याय

" जैनेन्द्रकुमार की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ "

जैनेन्द्रकुमारजी की कुछ कहानियाँ छोडने पर अधिकतर कहानियों में नारी-पात्रों को प्रधानता मिली है। कुछ कहानियाँ भी ऐसी है कि कहानीयों नारी पात्रों के नामसेही जानी जाती है। जैनेन्द्रकुमारजी ने अपनी कहानियोंके, उपन्यास तथा निबंधो के माध्यमसे नारी जीवन संबधी विचारों को व्यक्त किया है "फिर भी" उनकी कहानियों में नारी जाती के सामने अनेक समस्याएं खडी हो जाती है, क्योंकि हमारे भारतीय समाज में पुरुषों का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। परिवार, समाज, धार्मिक विधी,आदि स्थानपर स्त्रीसे पुरुष का अधिकार अधिक चलता है। परिवार का सारथी पुरुष होता है। पुरुष को महत्त्व का स्थान इसलिए दिया गया है, कि वह परिवार की रक्षा करता है, पुरुष किसी भी काम से मुखारता नहीं किसी भी हालात में, किसी भी समय वह संघर्ष करने के लिए तय्यार रहता है। सामाजिक, धार्मिक, प्राकृतिक आपत्तियों से पुरुष स्त्री की रक्षा करता है। समाज के नियमों से ही पुरुष को प्रधान माना गया है। तथा भारतीय संस्कृति पुरुष प्रधान होने के कारण पुरुष ने महत्वपूर्ण स्थान अपने लिये ही प्राप्त किया है। इसी कारण समाज में स्त्री दुय्यम स्थान प्राप्त रहा है।

विवाह के पवित्र बन्धन में बंध जानेपर परिवार के अन्य सदस्यों के साथ तथा पति के साथ सहचारिणी बन जाती है,

जिसे सतीत्व कहा जाता है, सतीत्व उसका धर्म होता है। जीवन की अच्छाईयाँ-बुराइयाँ वह पति के चरणों में समर्पित करके पति तथा परिवार के अन्य सदस्यों को आनंदीत रखना वह अपना कर्तव्य समझती है। पति के साथ सुख में दुख: में साथ प्रेम देकर पति के कठीन से कठीण समय में उसका सुख दुख बाँट लेना उसका कर्तव्य होता है। कभी-कभी समाज के इस नियमानुकूल कोई स्त्री अगर न रहे तो उस के सामने अनेक समस्याएँ खडी हो जाती है। प्रारंभिक कालमें नारी जीवन की जो समस्याएँ थी वे आज के युग में उतनी तीव्रतासे नही उभरती है, क्योंकि आज की नारी स्वतंत्र होने का प्रयत्न करती है। वह स्वयंका भार स्वय ढोना चाहती है। अनेक कोशिश करने के बावजूद समस्याओं की संख्या कम नहीं हुई धीरे-धीरे वह बढ़ती गई। नारी कल थी वहीं आज है, आज है वही कल रहेगी लेकिन उसकी समस्याएँ कभी भी नहीं छोडेंगी।

नारी जीवन में आनेवाली अनेक समस्याओं को जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। जो नारी जीवन से कभीभी छुटती नहीं। जैसे पारिवारिक समस्या, आर्थीक समस्या, सामाजिक समस्या, धार्मिक समस्या, राजनितिक समस्या, यौन समस्या, बच्चों की समस्या, कुमारी माता की समस्या, अनमेल विवाह समस्या, विधवा समस्या, वेश्या समस्या, नौकरी करनेवाली नारी की समस्या, बहु पत्नीत्व समस्या, पुनर्विवाह समस्या, प्रेम और विवाह समस्या, आदि अनेक प्रकार की समस्याएँ जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में अभि-व्यक्त किए है। जहाँ-जहाँ नारी पात्र कहानियों में स्थान रखती है, वहाँ-वहाँ उसके साथ उसकी जुडवा बहन की तरह समस्या उसके साथ चलती है।

जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में अनेक प्रकार की समस्या उभारती है। कहानी की नायिका हर एक समस्याओं से जुझ कर उसे सुलझाने में कोशिश करती है, चाहे उसमें उसे मिट जाना पडे तो भी वह मिट जाती है। लेकिन समस्याएँ उसे छोड़ती नहीं।

१] पारिवारिक समस्याएँ :

विवाह होने के बाद पति पत्नी ने एक दुसरे को समझ लेकर रहना बहुत जरूरी है। एक दुसरे के अनुरूप बनना भी जरूरी है। पति का स्वभाव उसकी चाह, और उसके विचार तथा शिक्षा आदि बातों को समझाना पत्नी के लिये जरूरी है। तथा पतिने पत्नी की चाह उसकी पसंद-नापसंद बातों को भी ध्यान में लेना चाहिए। एक दुसरे को समझलेने से ही गृहस्थी निभ पाती है अन्यथा अनेक समस्याएँ निर्माण हो जाती है। जितना एक दुसरे को समझकर व्यवहार किया जाता है उतना वह उचीत और सुखमय होता है। पति तथा पत्नी की उम्र का भी विचार करना जरूरी है क्योंकि अनमेल उम्रसे नारी के सामने समस्या खडी हो जाती है। पतिका साथ निभाना मुश्किल हो जाता है। उम्र के सिवा मानसिक अनमेल अधिक कठीन होता है और सामाजिक परिस्थिती के कारण नारी को मन ही मन व्दंन्द करना पडता है।

इसी प्रकार असामायिक व्यवहार के कारण परिवार में शित युध्द निर्माण होता है, सभी एक जगह आस-पास रहते हुए भी कोई किस का नहीं होता। इसी प्रकार की भावना पनपती है और इसी कारण परिवार में समस्या निर्माण होती है।

जैनेन्द्र कुमारजी ने "रानी महामाया" इस कहानी में चित्रित किया है। राजा के चले जाने के कारण रानी अकेली काम भावना से पीडित है। यौवन अवस्था में राजा उसे अकेली छोडकर चला गया है। अपने पति की राह देखते देखते रानी अनेक वर्ष बिताती है। रात-रातभर जागती रहती है। उसकी स्थिती इस प्रकार हो जाती है, "वर्ष पर वर्ष बीत गये हैं। यौवन परिपक्व होता गया है। और रातें आँसुओं से भीगती बीती है। राज्य में अखण्ड शासन चक्र चलता रहा है, निर्विघ्न-अनवरत और अलिप्त पर यौवन अब ढलना चाहता है।१

यौवनावस्था में प्रियतम से तथा प्रेम से वंचित रह जाने के कारण रानी का मन इतना निराश हो गया है कि अब उसमें कोई भी आनन्द का निर्माण होना असंभव है। इतने वर्षों के बाद पति के आगमन पर भी पत्नी में कोई उल्हास, आनन्द, तथा प्रमोद का निर्माण न होना एक असाधारण स्थिति है, जो समस्या की ओर संकेत करती है।

अपने पति के हृदय में हमेशा सिर्फ उसके लिए ही स्थान हो। पति अगर किसी अन्य स्त्री के लिए स्थान देना चाहता है तो यह बात वह कभीभी बर्दाश्त नहीं कर सकती। पति अगर किसी दूसरी स्त्री से अपने सम्बन्ध बढाना चाहता है तो वह मायूस, उदास हो जाती है उसके मन में पति तथा दूसरी स्त्री के लिए क्रोध और नफरत पैदा हो जाती है। स्वयं वह यह समझती है की पति अपना अपमान ही कर रहा है। इसी बात से वह सदा के लिए व्यथित पीडित रहती है। इसी प्रकार का चित्रण जैनेन्द्र ने "इनाम" इस

कहानी में किया है। धानंजय अपनी कक्षा में अव्वल आता है फिर भी उससे वह लाड-प्यार से स्नेह से पुचकारने के बजाय डाँटती रहती है। प्रमिला में उलझो हुए अपने पति के दुराचरण का निषेध वह अपने बालक से व्यवहार करते समय करती रहती है।

पारिवारिक समस्या का चित्रण जैनेन्द्र ने इस कहानी में उद्धृत किया है। धानंजय की माँ अपने पति के दुराचारी होने के कारण जीवन से पलायान करना चाहती है, वह कहती है, " मुझे तो मौत आ जाय तो भला"।[1] इस समस्या का समाधान बाल की ओर से जैनेन्द्रने किया है। प्रमिला धानंजय को इनाम माँगने के लिए कहती है तब वह कहता है, "देखो टालना मत, मेरा इनाम यह है कि इस घर में तुम अब से कभी न आना।[2]

पुरूषोंका दुराचारी होना, नशापानी करना, दुसरा ब्याह करना आदि बांते पारिवारि तथा सामाजिक समस्य का एक बहुत बडा कारण है। जिसे के कारण स्त्री का मन व्दिधावस्था में रहता है।

परिवार में बच्चों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है। परिवार बच्चों के बिना फला-फूला नहीं लगता। बच्चों की किलकारीया शरारत आदि बांतोसे घर भरा-पूरा लगता है।

जैनेन्द्रकुमारजीने पाजेब कहानी में भी ऐसे ही बालक की समस्या की ओर संकेत किया है जो बच्चे को माँ और पिता बच्चे के साथ असभ्य वर्तन करते है। माँ मारपीट कर मनवाती है तो पिता

अशुतोष के पिता कोठरी में उसे बन्द करने की सजा देकर अपना अपेक्षित उत्तर निकाल ने की कोशिश में लगे रहते है। इसी तरह बच्चों के स्वभाव को समझ लेने को बड़ी कोशिश नहीं करते और यह समस्या और भी बढ़ती है।

"घुंघरू" कहानी में भी ऐसी समस्या उद्भूत होती है कि पति पत्नी के प्रेम में सारी दुनिया भूल बैठें है। लेकिन पत्नी यह नहीं चाहती वह पतिसे घृणा, द्वेष भी चाहती है, लेकिन पति कभीभी उसे द्वेष नहीं करता इस पतिके प्रेम से वह उब जाती है ताकि इस बात से ही क्यों न वह घृणा करने लगे। अपना पति काम सेखाने लायक बन जाए। और वह अपने कामों को सँभाले। वह कोई काम का आदमी बन जाए।

"मास्टरजी" कहानी में भी मास्टरजी मोशाबाबू अपनी पत्नी श्यामकला को इतना चाहते है कि : आपने पति के प्रेम से उबी श्यामकला पहाडी नौकर के साथ भाग जाती है। इस पारिवारिक समस्या को नौकर के माध्यमसे सुलझाया गया है।

गृहत्याग करके लोग समाजसेवक तथा साधु- बैरागी बन जाते है। लेकिन पारिवारि दृष्टिसे यह एक समस्या ही है। अकेला कहानी में पति अपनी मन शांति के लिए घर छोडकर चला जाता है। घरका कारोबार पत्नि को संभालना पडता है। इसी प्रकार घर, बाल बच्चे, पत्नि को छोडकर जाना यह भी एक पारिवारिक समस्या हो सकती है। इस कहानी में पुरुष परिवार से मुक्ति तथा पलायन करना चाहता है।

"सम्बोधान" कहानी में यौन समस्या की ओर संकेत किया है। पति-पत्नी का आनन्दपूर्ण जीवन बिताना ही जीवन नहीं है। खान-पान, गहने, कपडे, आदि बातों से स्त्री का मन नहीं भरता वह पुरूष के प्रेम को पाने के लिए तरसती रहती है और यह बात पति को नहीं समझाती। इसी प्रकार की समस्याएँ जैनेन्द्रकुमारजी के अनेक कहानियों में मिलती हैं।

"ग्रामोफोन का रिकार्ड" कहानी में स्वर्णभार से लदी विजया की कामेच्छाएँ अतृप्त ही रह जाती हैं, पति अन्य कामों में इतना व्यस्त रहता है कि उसे पत्नी के साथ बात करने का अवसर तक नहीं मिलता। पती सुधार जाए इसलिए पत्नी अनेक प्रयत्न करती है और उसमें ही मिट जाती है। पत्नी का इस प्रकार का रास्ता अपनाना समस्या के सिवा और कुछ नहीं कह पाता।

पुरानी और नई पीढ़ियों में हमेंशा अन्तर रहा है। विस्मृति कहानी में भी इसी प्रकार की समस्या की ओर संकेत किया है। पुत्र अपनी पत्नी की ओर आकृष्ट होकर माँ को केवल काम करने का मशीन समझाता है। इस प्रकार की पारिवारीक समस्या हर एक के घरमें मिलती है।

असधारण स्थिती तब निर्माण होती है जब की किसी स्त्री तथा पुरूष के हाथों से समाज के बंधान के खिलाफ स्थिती निर्माण हो। यह भी एक समस्या हो सकती है। "निस्तार" कहानी में चित्रित पुष्पा दुराचरिणी ठहरती है। पुष्पा कॉलेज में पढ़नेवाले एक युवक के साथ संबध रखती है जिसका परिणाम उसके पेट में गर्भ रहता है।

काम भावना के कारण स्त्री पुरुष में उम्र की समानता का भी खयाल नहीं किया जाता। काम-वासना के उद्दीप्त होने पर वे किसी भी उम्र के स्त्री तथा पुरुष के प्रति आकृष्ट हो जाते है और यह भूल जाते हैं कि उनकी उम्र क्या है ? "ब्याह" कहानी में विवाह के विषय में नयी धारणा प्रस्तुत हुई है। वहाँ दूसरी ओर सयुंक्त परिवार की आर्थिक समस्या ओं पर भी प्रकाश डाला है।

सार्वजनिक स्थानोंपर सभ्यता तथा सुचारु रूपसे रहना चाहिए। सिनेमाघर, खेल के मैदान, बाजार, आदि स्थालोंपर स्त्री पुरुष एक दुसरे से कैसा व्यवहार करें ? इसके बारे में समाज ने हमें नियम दिए है और हम उसका पालक करते है। परंतु कोई स्त्री पुरुष इन नियमों के खिलाफ आपना आचरण करे तो यह भी एक समस्या हो सकती है। "एक रात" कहानी में जयराज तथा सुदर्शन के बारे में हुआ है। स्टेशन के प्लेटफॉर्मपर जयराज के गोद में सुदर्शना सो गई है। जब-जब समाज के नियमों के खिलाफ आचरण होता है तब वह समस्या अपना रूप धारण कर लेती है।

"अन्धे का भेद" कहानी में परिवार होते हुए भी न के बराबर है। अपने परिवार का पालन पोषण न कर पाने के कारण पत्नी पति की आँखे फोड देती है, और स्वयं वेश्या बन कर घर की जरूरतों को पूरा करती है। इस कहानी में भी पारिवारीक समस्या उघृत होती है।

"मीठी खीझा" कहानी में विमल ज्योत्सना के मन में जब काम भावना पैदा होती है तो सार्वजनिक स्थालों पो भी अपने

आपको संभालकर नहीं सकते। यह बात व्यवहार से पूर्णत: भिन्न होती है। इसी प्रकार की समस्या को भी जैनेन्द्रने अपने कहानियों में संकेत किया है।

"पानवाला" कहानी में स्त्री की इच्छा आशा आकांक्षाएँ पूर्ण न होने के कारण उसके आचरणमें विघटन होता है, इसीलिए वह भाग जाती है। स्त्री का घरसे भाग जाना पारिवारीक समस्या को निर्माण करता है।

"प्रियव्रत" कहानी में कवि साहित्य बहुत अच्छा लिखता था। लेकिन उसने लिखना बंद किया है। वह कविता लिखता बचपना मानता है। और वह दुबारा ऐसा करना नहीं चाहता। उसके दाम्पत्य जीवन में कुछ झगडे हो गये हैं। इस कारण वह कुछ बात नहीं करता मन ही मन घुटन महसूस करता है। किसी के सामने अपने मन की बात कहना नहीं चाहता। इसी समय उसकी पत्नी उसका साथ छोडकर चली जाती है। पत्नी चले जानेसे कविके जीवन नैराश्य आता है। इस बात को ओर ध्यान देकर पारिवारिक समस्या की ओर संकेत किया है।

"दर्शन की राह" कहानी में जैनेन्द्र ने यह समस्या उठाइ है कि पति का प्रेम पाने के लिए पत्नी अनेक कोशिशे करती है क्योंकि पति उससे पत्नीसा व्यवहार नहीं करता। प्रेम में डुबे पति को राह में लाने के लिए कहानि की नायिका रेल के नीचे जाकर आत्महत्या करती है। पारिवारिक जीवन इस प्रकार का रास्ता खोजना समस्या के सिवा और कुछ नहीं दे पाता।

"मानरक्षा" की मंदा पढी लिखी है। विवाह की उम्र लाँघकर इतनी आगे जाती है कि उसका विवाह का आनन्द तथा उसमें उत्पन्न होने वाली जीवन के प्रतिचाह सारी नष्ट हो जाती है। पढी लिखी लडकी की आकांक्षाएँ भी बढ जाती है। मंदा के घर-वाले भी ऐंठ पकडकर रह जाते है कि "वर" बनने वाले युवक का वर्तस ऊँचे दर्जेका हो। घरवाले तथा समाज के रिवाज़ के सामने मंदा के भावनाओं का चकनाचूर हो जाता है। स्त्री की भावनाओं से पैसा आधिक महत्त्वपूर्ण है, यही बात की ओर लेखकने लक्ष केंद्रीत किया है।

"अभागे लोग" कहानी में जैनेंद्र ने उद्दीप्त काम भावना का चित्रण किया है। रसवन्ती और हरिया यह मिलकर उद्दीप्त काम भावनाकी समस्या की ओर संकेत करते है।

जब किसी स्त्री को उसके पति का प्रेम नहीं मिलता तो वह अपना पूरा समय बच्चों में बिताती है बच्चों की देखभाल, खान-पान तथा पढाई-लिखाईयी की ओर ध्यान देकर बच्चोंका भविष्य उज्जवल करती है। "प्रमिला" नामक कहानी की नायिका को यह भी नसीब नहीं होता पति के साथ-साथ बच्चे भी दूर रहते है। इसी कारण उर्मिला के जीवन निराशा के सिवा और कुछ नहीं है। इस बेबस स्त्रीकी समस्याका चित्रण जैनेन्द्रकुमारजी ने इस कहानी में किया है।

अ. विज्ञान कहानी की नायिका मालती लोडरानी है। समाज सेविका है, समाज के काम करती है इसलिए समाज में जानी मानी भी है। आदित्य के प्रति उसके मन में कामभावना उमगती है इस बात को जैनेन्द्रकुमारजीने प्रस्तुत किया है। नायिका स्त्री है, इन्सान है, क्या वह समाज सेविका होने से उसे भावनानहीं है? लेकिन समाज

का नेतृत्व करनेवाले को वह सब छोडना पडता है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने कहानी के दसवे भाग में "निश्शेष" तथा मुक्ति" कहानी में भी पारीवारिक समस्या की ओर संकेत किया है। जीवन में जीने के लिए पैसों की, प्रेम की आवश्यकता होती है सिर्फ उपदेश देने से काम नहीं चलता। निश्शेष कहानी का नायक काम-धाम छोडकर घर में रहता है। और पत्नी को सिर्फ उपदेश देता है। इस बात से पत्नी उब जाती है। और पतिसे अलग रहने लगती है। इस बातको जान लेने के बजाय लोग कहानी की नायिका को दोष देते है।

जैनेन्द्रकमारजी के अनेक कहानियों में कामभावनासे परिपूर्ण अनेक समस्याएँ खडी हो गयी है। कामभावना अपनी उम्र का खयाल नहीं रखती। स्त्री विशिष्ट उम्र तक ही प्रणय की अपेक्षा रखती है। शरीर सम्बन्ध रखने के लिए उम्र की कुछ हद तक रतिभाव का निर्माण होता है। लेकिन दमित कामभावना को लेकर जीनेवाले भी कुछ पुरुष तथा स्त्री होते है। जो अपनी उम्र का कोई खयाल नहीं रखते। इसी बातके कारण व्यक्ति के आचरण में विघटन होकर पारिवारिक समस्या जन्म लेती है। "मुक्ति" नामेक कहानी में मनोरमा अपने जीवन के अंतिम क्षणों में तिरसठ वर्षीय के साथ एक नव विवाहिता की भाँति आचरण करती है।

इस प्रकार जैनेन्द्रकुमारजी की अनेक कहानियों में पारिवारिक समस्याएँ जन्म लेती है। सभी समस्याएँ कहानी की नायिकाओं को ही सुलझाना पडती है। कभी-कभी स्वयं नायिकाएँ समस्याएँ निर्माण करती है। लेकिन स्वयं वह मिट जाती है परंतु समस्या

सुलझाती नहीं। परिवार के सदस्यों के आचरण में विघटन आ जाता है, और पारिवारिक समस्या जन्म लेने लग लगती है। कभी पति का अति लोभ तथा प्रेम से उबन आती है। तो कहीं पर पत्नी के बदले अन्य स्त्री पर प्रेम होने के कारण समस्या निर्माण होती है। इसी प्रकार अनेक समस्याएँ जन्म लेती है। कभी पतिकी, तो कभी पत्नी की तो कभी प्रेयसी की तो कभी परिवार के अन्य सदस्यों को इस प्रकार जैनेन्द्रने अपने कहानियों में परिवार के आचरण में विघटन आ जाने के कारण समस्याएँ निर्माण हो जाता है यह स्पष्ट किया है।

जैनेन्द्र के कहानियों के नारी पात्रों के आचरण में विघटन आने के कारण समस्याएँ बढ़ने लगती हैं। वह कभी भी कम नहीं होती। कहानी की नायिका को अपनी इच्छा आकांक्षाएँ पूरी करने का अवसर नहीं मिलता। इसी कारण उनके मनमें वह बैठ जाती हैं। दमीत इच्छा आकांक्षाओं को पूरी करने के लिए वह तडपती रहती है। वह अपने पति के सामने कुछ कहना चाहती है, लेकिन उसका कौन सुने ? पति से उसे बार-बार झिडकियाँ मिलती है। इसी कारण वह उदास रहती है। मन में दबी हुयी इच्छाओं कि परिपूर्ति करना चाहती है इस कारण वह घर से बाहर की ओर झुलती रहती है। अपने पति को तथा परिवार का विद्रोह करके पर पुरुष के साथ चली जाती है। इसी प्रकार अनेक समस्याएँ जैनेन्द्र कुमारजी ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुतकी हैं। परिवार में विघटन होने के लिए जितने भी कारण होते हैं उनमें से एक-एक की ओर जैनेन्द्रकुमारजी ने संकेत किया है। साथ-साथ उसका समाधान करने का कोशिश भी की है।

२] जैनेन्द्रकुमार की कहानियों मे चित्रित यौन समस्याएँ :

जैनेन्द्रकी कहानियाँ समस्याओं के विविध रूपों को प्रस्तुत करती हैं और साथ ही सामाजिक जीवन की वैविध्यपूर्ण समस्याओं में अन्तर्विहित सत्य की ओर संकेत करती है।

जैनेन्द्र जीवन के वैविध्य में अनेक प्रेम-मूलक व्यापक दृष्टिकोन से एक ऐसी एक-सूत्रता स्थापित करते हैं कि कहानी में चित्रित समस्याएँ सत्य की उद्‌बोधक बन जाती है। वह किसी समस्या को यथातथ्य रूप में न ग्रहण करके उसके अतलस्पर्शी गहराई में भी झांक कर देखाते है और उस गहराई से उपलब्ध मानवीय सत्य ही उनकी कहानी का मूलस्वर बन कर मुखरित होता है।

हिन्दी-कहानी साहित्य में जैनेन्द्रकुमारजी सर्व प्रथम मनो वैज्ञानिक कहानीकार हैं, जिन्होंने मानव-मन की सूक्ष्म गहराईयों तक जाकर उसके अचेतन मन की मानसिक ग्रन्थियों को सुलझाने का प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य में अन्य मनो वैज्ञानिक कथाकारों की तरह फ्रायड के काम सिध्दांतो से प्रभावित है, यद्यपि उन्होने फ्रायड के काम "सेक्स" समस्या को अपनाकर अपनेही ढंगसे स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों और अतृप्त काम-वासनाओं का चित्रण अपने कहानियों में किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी का कहना है कि अतृप्त यौन-इच्छाएँ दमित होकर मन के अचेतन स्तर पर पडी रहती है। वही दमित भावनाएँ अथवा इच्छाए मानव के सभी व्यवहारों में विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्त

होती है। जैनेन्द्र इन दमित भावनाएँ अथवा इच्छाओं को स्वीकार करते हुए अपने कहानियों के नारी पात्रों के माध्यमसे स्पष्ट करते है। उनकी अनेक कहानियों मेंसे इसी प्रकार की दमित काम-भावनाएँ प्रकट होती है।

जैनेन्द्रकुमारजी की कहानियों में अभुक्त कामेच्छा का सूक्ष्म संकेत हुआ है।

" डा. देवराज उपाध्याय ने कहा है कि "रत्नप्रभा, बीट्रिस, प्रतिभा, निस्तारण, परावर्तन, में फ्रायडियन अवरुध्द काम वासना की झलक मिलती है।"

"ग्रामोफोन की रिकार्ड" , "विस्मृति", मास्टरजी, दर्शन की राह", "जान्हवी" आदि कहानियों में अभुक्त कामेच्छा का दर्शन हुआ है।

"ग्रामोफोन का रिकार्ड" कहानी में नायिका विद्या स्वर्णभार से लदी है लेकिन कामेच्छासे अतृप्त है। पति अन्य कामों में व्यस्त रहता है। उसे अपनी पत्नी के साथ बात करने का अवसर नहीं मिलता। नायक अपनी पत्नी को स्वर्णाके अलंकारोसे ही प्रसन्न रखना चाहता है। लेकिन पत्नी स्वर्णाके आभूषाणों को तुच्छ समझती है उसे पति के प्रेम की जरुरी है परंतु पति काम मेंव्यस्त है।

"मास्टरजी" कहानी में महामहिम अपनी पत्नी से जितना अधिक प्रेम करते हैं उनकी पत्नी उससे उतनी ही अधिक दूर जाती है। महामहिम अपने पत्नी को अलग अलग नामों से पुकार कर अपना प्रेम व्यक्त करना चाहते है लेकिन अपने पत्नी की अतृप्त कामेच्छा को मिटाते

नहीं। इस कारण एक दिन पत्नी पहाडी नौकर के साथ भाग जाती है।

"दर्शन की राह" कहानी में पति कामेच्छा से पीडित है। पत्नी काम और कर्तव्य में समन्वय चाहती है। पत्नी पति के व्यक्तित्व से दु:खी होकर आत्महत्या कर लेती है। इसीलिए पति की कामेच्छा अतृप्त ही रह जाती है।

"जान्हवी" कहानी में जान्हवी और बृजनन्दन दोनों की ओर से अतृप्ति बनी रहती है। "एक रात" कहानी में जयराज चाहता हुआ भी सुदर्शना से प्रेम नहीं कर सकता, क्यों कि वह सोना चाहती है। वह चाहता है यह रात आपस में बातें करते काट दें लेकिन सुदर्शना नही चाहती। "उर्ध्वबाहू" कहानी में तपस्वी उर्ध्वबाहू किशोरावस्था में अपनी समस्त इच्छाओं का दमन करके जीवनभर तपश्चर्या का व्रत धारण कर लेता है। इस कहानी में लेखकने संपूर्ण कहानी में उनके मानसिक संघर्ष एवं व्दव्दं की स्थिति को प्रस्तुत किया है।

"निर्मम" कहानी में लेखकने शिवा की अतृप्त इच्छा की ओर संकेत किया है। "रानी महामाया" कहानी में महामाया भी अतृप्त कामेच्छा से पीडित है। क्यों कि राजा वैजयन्ता यौवनावस्था में ही उसे छोडकर चला जाता है। प्रिय के आने की प्रतीक्षा में वह रातभर जागती रहती है। और रो-रोकर अपने दर्द को हल्का करती रहती है। "ऐसे ही वर्ष पर वर्ष बीत गए है। यौवन परिपक्व हो गया है और रातें आसुओं से भीगती बीती है। "

"चिडिया की बच्ची" कहानी में सेठ माधवदास की कामेच्छा अतृप्त रहने से उसके सभी सुख-सुविधाएँ, सुखी-जीवन निष्फल हो जाते हैं। अपने मन की अतृप्त काम भावना को मिटाने के

लिए वह एक सुन्दर चिड़िया को पाना चाहता है। वह उसे अलग-अलग प्रलोभन देकर भी वह उसे पाने में असमर्थ रहता है। चिड़िया के प्रति वह जितना अधिक आकृष्ट होता है, वह उतनी ही दूर भागती है।

"साधु की हठ" नामक कहानी में दरोगा की पत्नी चाहती है कि उसका पति सब बातों को भूलकर उसके पास शक्ति तथा "क्षमा-याचना के लिए आए पर वह नहीं आता। पति पत्नी का सम्बन्ध होने के कारण उसकी समस्त इच्छाएँ आकांक्षाएँ उसके अन्तर्जगत में जाकर बैठ जाती है जिसका लेखकने सूक्ष्म संकेत किया है।

"ध्रुवयात्रा एक पन्द्रह मिनट" जयसन्धि, आदि कहानियों में पात्रों के अन्तर्जगत में आकर्षण व्दव्द का प्राधान्य है। "एक पन्द्रह मिनट" नामक कहानी में भी युवक आरंभसे अंततक व्दन्व्द में पड़ा रहता है। वह जिससे प्यार करता है उससे विवाह करना चाहता है, परन्तु माता-पिता की इच्छाके विरुध्द विवाह नहीं कर सकता।

ध्रुवयात्रा, जयसन्धि, स्पर्धा आदि कहानियों में भी इसी प्रकार की समस्याएँ उध्दृत हुई हैं।

"सम्बोधन" कहानी में शंकर अपनी पत्नी और प्रेमिका किशोरी दोनो को समान रूप से चाहता है। न तो वह पत्नी को छोड़ना चाहता है और न किशोरी को। इस कारण उसकी मन:स्थिती तनाव पूर्ण रहती है। और इस तनावपूर्ण मन:स्थिति का कारण अभुक्त काम-वासना ही है।

"भद्र बाहु" कहानी में इन्द्र एक ओर मानव में कामेच्छा उत्पन्न करने के लिए हर वक्त प्रयत्नशील रहते हैं।

"नीलम देश की राजकन्या" नामक कहानी में राजकुमार नीलम देश की राजकन्या को पाना चाहता है और उसके वक्ष में प्रविष्ट होने से भी बचना चाहता है।

"त्रिबेनी" कहानी में त्रिबेनी पति की प्रकृति से असन्तुष्ट रहती है। उसकी मानसिक स्थिति संघर्षपूर्ण होने के कारण वह अपने इकलौते बेटे के साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं कर पाती।

"विस्मृति" कहानी में सभी पात्रों के अन्तर्व्दन्द का मूल कारण सास-बहू के विकृत सम्बन्ध है। उन दोनो के संघर्ष के कारण कहानी में अन्य व्यक्तियों का भी मानसिक सन्तुलन भंग हो जाता है।

"कुछ उलझन" नामक कहानी में श्याम और उसकी पत्नी दोनों एक दूसरे को गलत समझते है, और व्दन्न्दपूर्ण मन:स्थिति में रहते है।

"दर्शन की राह" कहानी में सुधा का पति इसलिए दु:खी एवं व्दन्न्द ग्रस्त रहता है, क्योंकि उसकी पत्नी खुबसुरत होनेपर भी मन से पतिको चाहती नहीं। "नीलम देश की राजकन्या" "प्यार कातर्क", जान्हवी, कहानी, प्रतिभा आदि कहानियों में अन्तर्व्दन्व्द का कारण अविवाहित रहना, आदि समस्याओं को उठाती है। "जान्हवी" नामक कहानी में जान्हवी प्रिय के प्रति आकृष्ट तो है, पर वह सामाजिक प्रथाओं अथवा मान्यताओं का विरोध भी नहीं करना चाहती है। "निस्तार" कहानी की नायिका

पुष्पा दुराचारिणी है। पर पुरुष के साथ रहकर वह अपने चरित्र को कलुषित कर लेती है, और जब उसके पिता के मित्र उससे वास्तविक स्थिती के विषय में पूछते है तब वह कुछ नहीं बोलती। इसी प्रकार "प्रमिला" कहानी में भी अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण लेखकने किया है।

ब्याह, भाभी, घुंघरू, विस्मृति, परावर्तन, दृष्टि-दोष, एकरात, मास्टरजी, प्रेम की बात, पानवाला, रुकिया बुढ़िया, राजीव और भाभी, मीठी खीझ, जान्हवी आदि प्रणयवादी कहानियाँ है। इन कहानियों में पात्रों में कुण्ठा, घुटन तथा पलायनवादी प्रवृत्ति का प्राधान्य है।

कहानियों में पति अथवा प्रेमी के साथ सम्बन्ध ठीक न होने कारण इन कहानियों में घुटन, कुण्ठा, अभुक्त कामेच्छा इसी प्रकार की समस्याएँ निर्माण हो जाती है।

रत्नप्रभा, बोट्रिस, प्रतिभा, ग्रामोफोन का रिकार्ड, विस्मृति, मास्टरजी, दर्शन की राह, जान्हवी, एक रात, उर्ध्वबाहू, निर्मम, रानी महामाया, चिड़िया की बच्ची, साधु की हठ, ध्रुव-यात्रा, एक पन्द्रह मिनट, जयसन्धि, स्पर्धा संम्बोधन, फोटोग्राफी, भद्रबाहु, नीलम देश की राजकन्या, आदि कहानियों में कुण्ठा, घुटन तथा अभुक्त कामेच्छा रहनेसे इस कहानियों में यौन समस्याएँ निर्माण हो गई है।

3] <u>आर्थिक समस्याएँ</u> :

मनुष्य को उसकी बुध्दिमता पर नापा नहीं जाता उसके पास कितने पैसे है, कितने नोंकरचाकर है, इन बातोंपर मनुष्य का मूल्य निश्चित किया जाता है। मनुष्य के पास जितने ज्यादा पैसे

होंगे उतना उसका मुल्य अधिक किया जाता है। लेकिन समाज में हर एक के पास आधिक पैसे नहीं होते किसी व्यक्ती के पास अधिक पैसे होते है और वह व्यक्ति उसमें और बढ़ाने के लिए अधिक प्रयत्नशिल रहता है। तो इसके विरूध्द कुछ व्यक्तियों के पास दो वक्त की रोटी का भी इंतजाम नहीं रहता ऐसे लोगों को लेकर ही अमीर लोग अपना धार व्यवहार, कारोभार बढ़ाते है और इसके बदले में उन्हें कम मजदूरी देते है। उस मजदूरी से मजदूर का दो वक्त हा पेट भी नहीं भरता अपनी स्थिती सुधारने के लिए वह दिनरात मेहनत करता है परंतु उसकी स्थिती सुधारने के बदले बिघाडती जाती है वह चिंता-ग्रस्त रहने लगता है और चिंताग्रस्त रहने का सबसे बडा कारण उसकी आर्थिक स्थिति। जीवन जीने के लिए वह प्रयत्न करते-करते उसी स्थिति में रहता है। जीवनभर वह आर्थिक समस्या को सुधारने की कोशिश करता है परंतु यह समस्या हल नहीं होती और इसके साथ-साथ दुसरी समस्याएँ उभारने लगती है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने इसी प्रकार की समस्याओं को अपनी कहानियों के पात्रों की परिस्थितीसे स्पष्ट रूपसे चित्रित किया है। जैनेन्द्रकुमारजी के कहानी के पात्र ज्यादा तर निम्न वर्ग के है। जिनको अन्न, वस्त्र, और निवास प्राप्त कर लेना भी मुश्किल है। "यथावत" इस कहानी में जैनेन्द्रकुमारजी ने इस समस्या का चित्रण किया है। "माँ को देखकर उसे संशय होने लगता है कि सब ठीक है कि नहीं? माँ से एक शब्द भी पाना उसके लिए संभव नहीं है। यह सब उसके मन को हिला देता है। उसे आगे पढ़ना है और जरूर पढ़ना है। लेकिन माँ को क्या हुआ है ?[5]"

जगरूप के पास पैसे न होने कारण वह कॉलेज में दाखील होने के लिए फॉर्म नहीं भरता। शिक्षा उसके लिए महत्वपूर्ण

आवश्यकता है परंतु वह पूर्ण नहीं कर सकता। मैट्रिक की परीक्षा जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर भी वह अगली पढ़ाई करने में असमर्थ रहता है। जगरूप निराश और हताश हो जाता है, उसके दयनीय स्थितिका चित्रण जैनेन्द्रने गंभीरतासे किया है।

"कामनापूर्ति" इस कहानी में पंडितानी की शोचनीय अर्थिक स्थिति का चित्रण इस समस्या की ओर संकेत करता है। "पण्डितानी सेठों के हल को तरसती थी खिलाने को कोई पास नहीं है, अपने दो जने कैसे से रहते है। न क्लेश, न चिन्ता, न कलह, मुझपर इतने सारे खाने को आ पडे है तो क्या करूँ ?६"

जिस परिवार की अमदनी कम और परिवार के सदस्य अधिक हो तो उनके पालन-पोषण का प्रश्न चिन्ता को बढानेवाला होता है। जैसे जैसे बच्चे बढने लगते है, उनकी माँगे भी बढती है। परिवार के सदस्य बढते है, और साथ साथ महँगाई भी बढती रहती है। इसी हालात में घर का खर्च कैसा चलाया जायेगा ? आदि प्रश्न निर्माण होते है। पण्डित तथा पण्डितानी और उनके आठ बच्चे कुल मिलाकर परिवार में दस सदस्य है और कमानेवाले सिर्फ पण्डित जैनेन्द्रने इस कहानी में अर्थिक प्रश्न की ओर संकेत किया है। और यह भी बताया है कि यदि छोटा परिवार होता तो शायद यह समस्या खडी नहीती।

मनुष्य की आर्थिक स्थिति ठिक न होने के कारण वह अपने मन चाहे जैसा नहीं रह सकता। असे अपनी इच्छाएँ रोकनी पडती है। गरीबी के कारण वह इधर-उधर जा भी नहीं सकता। दो वक्त की रोटी मुनासिब नहीं होती तो सफर के लिए वह कहाँसे पैसे लाएगा ? इसका अच्छा खासा उदाहरण जैनेन्द्रने "इक्केमें" इस कहानी

में किया है। "बाबू ज्यादा दरजा ? मैंने देखा, मैं इन कुलियों को यह नही कह सकता कि चौथा दरजा नहीं है, इस से तीसरे में बैठता हूँ। इसे ये लोग "एप्रिशियेट" नहीं कर सकेंगे।"[6]

गरीबी मानवी जीवन के लिए शाप होता है। और इस शाप के कारण समाज में उसका सम्मानभी नहीं होता सिर्फ घृणा और तिरस्कार होता है। गरीबीकी समस्या तो है उस के साथ-साथ इस समस्याही छुपाने के लिए वह जो प्रयत्न करता है, तब दुसरी समस्या खडी हो जाती है।

"अन्धेका भेद" कहानी में अर्थ के कारणही सारा परिवार तितर-बितर हो गया है। पिता भिख माँगता है इसीलिए लडका उसे अपना बाप नहीं समझता। समाज में भिख माँगना शर्म की बात लगती है। गरीबी के कारण पूरे परिवार का पालन पोषण करना मुश्किल हो जाता है। अन्धे को उम्र अब ढलने लगने के कारण उससे अब भिख भी नहीं मिलती इसीलिए कहानी की नायिका अपने पति की आँखे फोड देती है और स्वयं वेश्यावृत्ति को अपनाती है। लेकिन उसे इस बात का पश्चाताप होता है तो वह ईश्वर से प्रार्थना करती है। आर्थिक स्थिति के कारण निर्माण होने वाली इस सामाजिक समस्याको जैनेन्द्रकुमारजी ने "अन्धे का भेद" इस कहानी में बहुत प्रभावी रूप से चित्रित किया है। "एक दिन" कहानी में माँ बेटे की आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है। बेटे के पास पैसे नहीं है, माँ बिमार है, घरमें दूध, आटा, चावल के लिए पैसे नहीं हैं। बच्चों के किताब तथा स्लेट खरीदने के लिए भी पैसे नहीं है। एक प्रकाशक उसे पैसे भेजनेवाला था उसके पत्र की प्रतिक्षा आस लगाए बैठता है परंतु उसका पत्र भी आ जाता है और बातोंपर पानी फेर जाता है। उस में लिखा था " आपका पत्र यथा समय मिल गया।

उत्तर में निवेदन है, कि अप्रैल के आरम्भ तक पारितोषिक आपको सेवा में पहुँच जायेगा। व्यवसाय की स्थिती ऐसीही है। क्षमा करें। पत्र मिलते ही उस की सभी आशाओंपर पानी फिर जाता है। एक दूसरे के हाथों में हाथ डाले आनेवाले समस्याओं को जैनेन्द्रकुमारजी ने इस कहानी में चित्रित किया है।

"अपना पराया कहानी" कहानी में भी आर्थिक स्थिति से उत्पन्न होने वाली समस्या हमारे सामने आती है। कहानी का नायक फौज में भरती हुआ है पांच साल हो गए है। वह अपने घर वापस नहीं आया न कभी पत्र भिजवाया। उसकी पत्नी इंतजार करते करते परेशान हो जाती है। घर छूट जाता है। रात्री के समय में वह आसरा लेने के लिए एक सराय में आश्रय लिए बैठ जाती है। भूख के कारण वह जोर जोर से रोने लगता है वह चुप नहीं होता उसी सराए में एक सिपाही विश्रांत ले रहा था। जिसकी निंद खुल जाती है। वह बच्चे को चुप कराने के लिए कहता है लेकिन बच्चा चुप नहीं होता उसके पेट की आग उसे चुप बैठने नहीं देती। हालात के कारण वह अपने बच्चे को सिपाही के पैरोंपर डालती है और कहती है "मै चली जाती हूँ बच्चे को तुम ठोकर मारकर जहाँ चाहे फेंक दो।" "अपना पराया" इस कहानी में जैनेन्द्रने हालात से मजबूर हुयी माता की करूण कहानी को प्रस्तुत किया है।

"एक गो" कहानी में बदलते हालात का चित्रण लेखकने प्रस्तुत किया है। स्वातंत्र्योत्तर के बाद औद्योगिकरण का विकास होता गया। धीरे-धीरे शहर, गाँव की ओर बढने लगे कारखानों की संख्या बढती गयी नौकरी के कारण गाँववासी शहर की ओर

जाने लगे इसीलिए गाँव में लोग कम रहने लगे। बरसात के भरोसे खेती होने के कारण किसान का भरोसा उठ गया इसी प्रकार के एक हीरासिंह नामक गरीब किसान की समस्या को जैनेन्द्रने चित्रित किया है। "पर धीरे-धीरे अवस्था बिगडती गई। आज हीरा-सिंह को यह समझ में नहीं आता है कि अपनी बीवी, दो बच्चे, खुद और अपनी सुन्दरिया गाय की परवरिश कैसे करे ?[1]" औद्योगीकरण के कारण ओस पडे देहातों की बडी शोचनिय स्थितिका चित्रण जैनेन्द्रने "एक गो" इस कहानी में किया है।

"प्रियव्रत" इस कहानी में प्रियव्रत निराश बन चुका है। अपनी हालात सुधारने के लिए वह हजार कोशिशे करता है लेकिन वह कामयाब नहीं होता। इस निराशा को भूल जाने के लिये वह शराब पिने लगता है। पैसों के लिए वह निचले दर्जे के काम करना पसंद नहीं करता। शराब की लत बढ़ जाती है और उसमें ही वह मर जाता है। अर्थिक स्थिति अच्छे इन्सान को बिघाडती है तो कभी बूरे इन्सान को अच्छा बनाती है इसका उदाहरण इस कहानी में मिलता है।

मनुष्य का जीवन समस्याओं से भरा रहता है एक समस्या मिट गयी जब तक दुसरी खडी हो जाती है दुसरी मिटाते समय तीसरी उत्पन्न हो जाती है आखीर सभी समस्याओं का एक ही कारण है आर्थिक समस्या। कभी-कभी अर्थिक समस्या को मिटाते समय जीवन का अन्त करना पड़ता है इसका चित्रण हमें "चोरी" इस कहानी में मिलता है।

लखुने महाजन की ओर से तीन साल पहले बीज के लिए आलू उधार लिए थे। लेकिन समयपर वह वापस नहीं कर सका सूद-

दर-सूद वसूल करने के लिए महाजन लछू को झोपडी को खाली कराता है। लछू अब बेसहारा हो जाता है। दो वक्त की रोटी लाकर वह अपनी बहु, तीन बच्चें, बुढियाँ माँ और एक दूर की अनाथ विधवा भाभी को लेकर वह गुजारा करता था। अपने परिवार के साथ रहता था। वह झोपडी भी आज उसकी नहीं रही है। इसी प्रकार अनेक लछू अपने घर महाजन के हाथ खो देते है। सूद खोरो से बनी आर्थीक समस्या को जैनेन्द्र इस कहानी में चित्रित किया है।

कभी-कभी गरीबी के कारण रिश्तों को खोना पडता है इसका उदाहरण जैनेन्द्र ने "घुंघरू" इस कहानी में किया है। माँ का इलाज पुत्र कर नही सकता क्योंकि उसकी आर्थीक स्थिति ठिक नहीं है इतनाही नहीं तो माँके मृत्युके पश्चात क्रियाकर्म करने के लिए भी उसके पास पैसे नहीं है इसलिए वह घर से भाग जाता है आखीर पास-पडोसी क्रियाकर्म करते है लेकिन यह बात पुत्र के मन में घुटन पैदा करती है। मनुष्य को मोम से पत्थर बनाने वाली आर्थीक समस्याही उदाहरण है।

अर्थ के अभाव के कारण देशभक्त अपनी देशसेवा छोडकर परिवार को रोजी रोटी पाने के लिए नौकरी करने लगता है। जैनेन्द्रने इस समस्या को "आतिथ्य" इसकहानी में चित्रिण किया है। कहानी के नायक के सामने अनेक समस्याए खडी है पिता बिमार है उनको दवा लाने के लिए पैसे नहीं है। घर में खाने के लिए कुछ न होने के कारण कहानी की नायिका क्या पकायेगी ? वह परेशान है। बच्चे के भूख के मारे इधर-उधर घुम रहे है।

मनुष्य को आर्थीक स्थिति ठिक हो तब ही वह सब

कुछ कर सकता है परंतु आर्थिक स्थिति ठिक न हो तो मातृभूमि को स्वतंत्र कराने को चाह होकर भी वह कुछ कर नहीं सकता। इसी समस्याको जैनेन्द्रकुमारजी ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है।

"एक टाइप" कहानी में लेखकने सरकारी दफ्तरी में होनेवाले रिश्वतखोरी की ओर संकेत किया है। कहानी में एक सज्जन को पैतीस रुपये पेन्शन मिलती है लेकिन उसके घर में ग्यारह व्यक्ति है। इन पैतीस रुपये में वह ग्यारह व्यक्तिओं का खर्च चला नहीं सकता। जिस वक्त वह सज्जन की नौकरी की शुरुआत हो गई तब उसकी तनखाह बीस रुपये थी और नौकरी से रिटायर्ड हो गया तब सत्तर रुपये तनखाह थी। लेकिन इन कम पैसो में उसने मकान बनवाया लडकियों की शादीकी, लडको की पढ़ाई उनकी नौकरी आदि बातों के लिए उसने पैसे कहाँसे लाये होगें ? इस बात की ओर ध्यान देते हुए लेखक को यह बताना है कि सरकारी दफ्तरों में अपनी तनखाह पर कोई निर्भर नहीं रहता। लेखकने सरकारी दफतारों में होनेवाली रिश्वतखोरी की ओर संकेत किया है।

मनुष्य की आय बढ़ने पर सदाचार से लोगों के साथ पेश आना यह भी एक समस्या है। आय बढ़ने पर शर्माजी की भावना बदली जाती है। उनका ठाठ-बाट बढ़ जाता है क्यों कि सामाजिक प्रतिष्ठा का वह मान दण्ड माना जाता है। शर्माजी धन जुटाते हे उसके लिए उन्हें नियमों का उल्लघन करना भी पडें तो वह करते हैं। लेखकने "चक्कर सदाचार का" इस कहानी इस समस्या को चित्रित किया है।

इस दुनिया में सबसे बडा रूपया है। पैसे के कारण मनुष्य बहुत सारे काम कर सकता है पैसो के बिना मनुष्य का कोई काम चल ही नहीं सकता इसका उदाहरण "कुछ उलझन" इस कहानी में मिलता है। जीवन की सच्चाई को जानने के लिए सदानंद ने जंगल की वि जनता में बहुत सारे दिन व्यतीत करता है और अपनी प्रेयसी के पति से दिए हुए पाँस हजार रूपये खर्च करन के लिए बम्बई आ गया है। अभावात्मक तथा एकाकी रहकर भी उसने पैसे के महत्व को जान लिया है।

पैसों के बिना कुछ चलताही नहीं है लेकिन पैसों के कारण मनुष्य का जीवन अन्दरसे नीरस और निसत्व बन जाता है। उस में एक दूसरे के प्रति स्नेह तथा अपनत्व नहीं बचता इसी बात की ओर स्नेह लेखकने संकेत किया है।

देहाती में खेती की और जमीन की बहुत बडा महत्त्व रहता है खेती और जमीन किसानो की देवता है, उसे पूजते है, फसल उगाते है उसी के सहारे अपने अपने जमीन की हिफाजत करते करते एक दूसरे की जान भी लेते है। स्वार्थ की परिसीमा है कि मनुष्य से बेरहमी या अमानवीयता से व्यवहार करता है। मुसीबत के समय अगर किसीने मदद भी की होंगी तो वह भी भूल जाते है और एक दूसरे के खून के प्यासे बन जाते है। पैसो के लिए हो अथवा जमीन के लिए हो आखिर यह आर्थिक समस्याही है। "मौत की कहानी" में भी इसी आर्थिक समस्याका चित्रण किया है मालदार आदमी अपना रोब जमाने के लिए किस प्रकार अपनी सम्पत्ति का अवलम्ब करता है इसका उदाहरण हमें प्रस्तुत कहानी में मिलता है।

"तो लाये ?" कहानी में लेखकने मध्यवर्ग के व्यक्तिका चित्रण किया है। मध्यवर्ग के व्यक्ति की आय कम होती है और खर्च जादा होता है इसलिए वह दिनरात हिसाब के चक्कर में फसा रहता है। रोज के जिन्दगीसे उसे छुटकारा नही मिलता क्यों कि उसकी आय कम होने के कारण दोवक्त की रोटी के सिवाय वह और कुछ कर नहीं सकता। दान, धर्म आदि बातें तो छोड दो लेकिन रहम के कारण वह दो रूपये भी किसी को दे नहीं सकता।

खाट पर पडा हुआ बीमार आदमी इस कहानी के नायक क्लर्क के पास पैसे माँगता है। और दो रोज जीने की आशा रखता। लेकिन नायक घर में आकर अपना बजट देखता है तो ऐसी कोई उम्मीद नहीं बँधती कि वह उसे दो रूपये देगा। बीमार आदमी मर जाता है लेकिन नायक के हाथों उसे पैसे नहीं छुटते। पैसे के अभाव में निम्न वर्ग के लागों की स्थिति कितनी दयनीय और असहाय हो जाती है, निम्न वर्ग के लोग मर जाते हैं लेकिन उनकी आशा आकांक्षाए पूरी नहीं होती इसका चित्रण जैनेन्द्रने "तो लाये" इस कहानी में किया है।

"किसका रूपया" कहानी में लेखक ने मध्यमवर्ग लागों का ही चित्रण किया है। गरीबों के लिये एकरूपया कितना बडा होता है इस बात की ओर लेखकने संकेत किया है। कहानी में दस ग्यारह वर्ष की लडकी के हाथों से एक रूपया खो जाता है जिसे उसके माँ ने घरकी जरूरी चीजे लाने के लिए दिया था लेकिन उसके हाथों से गिर जाता है और वह पागल की तरह सभी रास्ते ढूँढती है फिर भी उसे नहीं मिलता। धीरे-धीरे अंधेरा होने लगता है और उसके मन डर बढ़ने लगता है ढूंढते ढुढते वह कहती है "हाय रे, अम्माँ क्या कहेंगी ? अम्माँ मुझे बहुत मारेंगी।"[10]

"सजा" कहानी में अपने लड़के के स्कूल की किताबें खरीदने के लिए बैंयालिस रुपयोंकी की जरूरी है लेकिन वह उतने रुपये इकट्ठा नहीं कर सकती है। वह अपने में उम्मीद करती है कि उतने रुपये उसे इनाम में मिलेंगे।

"चालीस रुपये" में लेखकने पैसों के कारण अपराधों को स्वीकारा जाता है लेकिन मन में सिर्फ पैसे इकठ्ठे करने की आस है। चालीस रुपये का कर्ज चुकाने के लिए कहानी की नायिका को चोरी करनी पडती है। वेश्या बनना पडता है और जेल जाना पडता है इतना सभी करके उसे चालीस रुपये कर्ज चुकाना है। पैसे के अभाव में मनुष्य को कितनी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती है इस बात का चित्रण "चालीस रुपये" कहानी में चित्रण किया है।

"रुकिया बुढीया" कहानी में रुकिया का पति उसे छोडकर चला गया है तबसे वह फूल बेचकर अपना खर्च चला लेती है। वह अब बुढी हो गई है। कभी-कभी उससे काम नहीं होता तब उसके सामने आर्थिक समस्या खडी हो जाती है और वह अपने नसीब को कोसते बैठती है।

"मानरक्षा" कहानी में आर्थिक अभाव के कारणही मंदा की शादी नही हो रही है। ना तो उसे आधिक वेतन की नौकरी मिल रही है और ना तो उसकी शादी तय हो रही है। वेतन तो बढता नहीं लेकिन वेतन बढनेकी आशा में वह अपनी जिन्दगी बीता रही है। शायद वेतन बढने पर कोई अच्छा सा पति उसे मिल जाए।

"अभागे लोग" कहानी में लेखकने गरीब से गरीब लोगों की अर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। कहानी की नायिका

रसवन्ती अनपढ़ तथा अज्ञानी है। अनपढ़ होने के कारण न तो वह पढ़ सकती है ना उसे हिसाब आता है, न तो वह नौकरी कर सकती है। लेकिन पेट की आग बुझाने के लिए उसे कुछ न कुछ छोटे-मोटे काम करना पडते है। अशिक्षित और साथ में आर्थिक आदि समस्या को लेखकने इस कहानी में चित्रित किया है।

"माया भाभी" कहानी में कहानी की नायिका की स्थिति कुछ साल पहले बहुत अच्छी थी लेकिन पति की मृत्यू के बाद उसे नौकरी की तलाश करनी पडती है। कहानी में माया भाभी की मुलाकात नायक से होती है परंतु पहचान बताने के लिए वह हिच-कियाती है क्योंकि मायाभाभी की स्थिती पहले जैसे नहीं रही है।

"वह रानी" कहानी में नायिका को अपने जवानी की याद आती है। नायिका अब बुढी हो गयी है फिरभी उसे जवानी में पाया सुख याद आता है। घर का कार्य उसका लडका चलाता है परंतु उसका मन यह मानता नहीं आर्थिक स्थिती के कारण ही वह जवानी के दिन याद करते रहती है। और मन ही मन कुरेदती है। "आर्थिक दृष्टीसे मनुष्य के सामने अर्थोपार्जन की मूलभूत समस्या है। वह धन की प्राप्ति किस पैसो के अभाव के कारण अपना घर, जेवर जमीन, गिरवी रखने पडते है और साहूकार से कर्ज लिया जाता है," जो कभीभी चुका नहीं सकते साहूकार का सूद बढतेही जाता है और किसान की जमीन धीरे-धीरे साहूकार के नामपर चढ़ जाती है। इसी चिंतासे मनुष्य चिंताग्रस्त बन जाता है।

आर्थिक अभाव के कारण ही मनुष्य को बुरी बातों का बुरी आदतों का सहारा लेना पडता है। कोई कभी चोर बन जाता है तो कोई डकैती डालता है, तो कोई रिश्वत लेता है तो स्त्री को

वेश्यावृत्ति को अपनाना पडता है। इसी प्रकार समाजने जिन बातों का निषेध किया है उन बातों को अपनाकर जीना पड़ता है चाहे समाज तथा उसके नियम कुछ भी हो।

सभी समस्याओं की जड़ एक ही है वह है आर्थिक समस्या इसी समस्या को लेकर जैनेन्द्रकुमारजी ने अपनी कहानियोंमें संकेत किया है। कहानी की नायिकाओं कों आर्थिक समस्याओं के कारण नई-नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है यह कहानियों में चित्रित किया है।

४] कहानी में चित्रित राजनीतिक समस्याएँ :

जैनेन्द्रकुमारजी ने अपनी कहानियों में नारी की अनेक समस्याओं को चित्रित किया है। समाज में रहने वालों को समाज के नियमों के नुसार रहना पड़ता है उसके नियमों को मानना पड़ता है। समाज के नियमों का जो उल्लंघन करेगा उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। लेकिन मनुष्य को नीजि समस्याएँ तो उसे कभीभी नहीं छोडती जैसे आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक आदि समस्याओं के साथ राजनीतिक समस्याभी उतनीही महत्त्वपूर्ण है।

अपना देश स्वतंत्र कराने के लिए अनेक देशभक्तों ने अपनी जानकी बाजी लगायी है। अनेकोने अपने प्राण गवायें है तब कहीं बडी मुश्किलसे अपना देश स्वतंत्र हुआ है। लेकिन इन देशभक्तों में दो प्रकार के लोग थे। एक सशस्त्र क्रान्तिमें शामिल था तो दूसरा सत्याग्रह तथा अहिंसात्मक मार्ग से जाकर अपने देश को आझाद कराना चाहता था। देश के कुछ लोग सशस्त्र दल को मानते थे तो कुछ अहिंसात्मक दल को कार्यकर्ताओं को मानते थें। रेल उड़ाना

कोर्ट, स्कूल तथा सरकारी दफ्तरों को जलाना आदि कार्य करनेवाले समूचे देश में फैले हुए थे। और अपना कामभी कर रहे थे।

अहिंसात्मक मार्ग से जोनेवाले अनशन, कर रहे थे तो मूक मोर्चे निकालकर हम सब एक है यह सरकार को बता रहे थे। असफल में स्वातंत्र्य मिलना यह एक समस्या थी फिर भी अपने देश को किस मार्ग से स्वातंत्र्य कराया जाय यह भी एक समस्या थी ?

जैनेन्द्रकुमारजी गांधीवादी थे, उन्होंने स्वातंत्र्य प्राप्तिकी इस गतिविधि को राजनीतिक समस्या के रूप में चित्रित किया है। जैनेन्द्र की ऐसी अनेक कहानियाँ है जिनमें राजनैतिक समस्याएँ उभारती है।

"फाँसी" कहानीका नायक शमशेर जिसे बचपन से ही माता-पिता का प्रेम नहीं मिलता शमशेर डकैती करता है और गरीब लोंगो को सहाय्यता करता है। गरीबों के प्रति उसके मनमें प्रेम है। डकैती के अपराध में उसे फाँसी हो जाती है। फाँसी से उसे कोई बचाना नही चाहता लेकिन पुलिस अफसर की लडकी जूली रेबेका उसे बचाना चाहती है। शमशेर से प्रेम करना चाहती है। उसके साथ जीवन बिताना चाहती है लेकिन शमशेर इन बातोंपर विश्वास नहीं रखता। शमशेर फाँसी पर जाने के लिए तैय्यार है उसके मन में थोडासा भी भय नहीं है। जूली रेबेका अपना प्रेम जतलाकर उसके विचार परिवर्तन करना चाहती है लेकिन शमशेर यह सब नहीं मानता वह दुसरोंको कष्ट देना नहीं चाहता। आखीर शमशेर को फाँसी हो जाती है और जूली रेबेका जब से उदास रहती है आँखोंसे पानी कभी खत्म नही होता।

जूली रेबेका एक ही ऐसी नारी है जिसके मनमें शमशेर के प्रति प्रेम है लेकिन अकेली नारी का कौन सुनेगा? कानून? समाज ? या उसका अपना प्रेम ?

"गदर के बाद" कहानी में जैनेन्द्रने एक ऐसी समस्या उठायी है जब कानून समाज की रक्षा नहीं करता। समाज की रक्षा दायित्व उनपर है। जैनेन्द्रने इसी समस्या का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है। अंग्रेज अफसर अपने पत्नि को छोडकर भाग जाता है। अकेली पत्नि और अपना बच्चा लेकर दर-बदर घुमती है। क्रांतिकारों के दलमें फँस जाने के बाद उसके बच्चे को मारा जाता है और अंग्रेज युवती को बहुत छेडा जाता है। इस समय शासन भी उसकी मदद नहीं करता। आपत्ती काल में शासन भी अगर मदद नहीं कर सकता इस समस्या का जैनेन्द्र ने चित्रण किया है।

"जब समाज में दुर्घटना घटित होती है तब उसकी तहकिकात पुलिस करती है। लेकिन पुलिस को मालूम होकर भी वह जाँच पडताल नहीं करेगी तो समाज में उस दुर्घटना को लेकर अफवाएँ फैलने लगती है। जनजीवन बिखर जाता है लेकिन पुलिस की ओर से ऐसी कोई कार्यवाही नहीं होती की अफवाएँ रुक जाए। इसी समस्या को जैनेन्द्रकुमारजी ने चित्रित किया है।

मास्टर दीनानाथ की लडकी सुखादा भागीरथजी के साथ किसी बगीचे में घुमने जाती है लेकिन भागीरथ के कपडे देखकर लोग ऐसा समझते है कि स्त्रियोंको भगानेवाला यह साधू है इसी बात को लेकर अफवाएँ फैल जाती है स्त्री हिन्दू की है। भागीर स्त्री ही है। इसी स्त्री को साधू के साथ देखकर समस्याएँ खडी हो जाती है। लेखक के यह कहना है कि साधु के साथ कोई भी स्त्री खुलेआम घुम नहीं सकती उसे बंधानों में ही रहना है। इस समस्या की ओर लेखकने संकेत किया है।

"स्पर्द्धा" इस कहानी में कहानी की नायिका मैरिथ है जिस के सामने ऐसी समस्या खाडी है कि एक ओर देश और दूसरी ओर प्रेमी तथा प्रेम। प्रेमी को बचाना है तो देश को त्यागना है, और देश को बचाना है तो प्रेमी को त्यागना है। लेकिन मैरिथ अपने प्रेमसे देश को अधिक महत्त्व देती है। और देश के लिए जीना चाहती है षडयंत्र रचाकर वह अपने प्रेमी की हत्या करवाती है। कहानी के नायिका के सामने प्रेम श्रेष्ठ या देश इसी प्रकार की समस्या खाडी हो जाती है। फिरभी अपने देश के प्रति अपने प्रेम को भूल जाती है। इसी प्रकार की समस्या को जैनेन्द्रकुमारजी "स्पर्द्धा" कहानी में चित्रित किया है।

"जनार्दन की रानी" इस कहानी में सत्ताकांक्षी सचिवों के हाथों जनतन्त्र भी जनहितनही कर पाता इसी समस्या को जैनेन्द्र-कुमारजीने इस कहानी में चित्रित किया है। राजा जनार्दन अपना राज छोडकर चला जाता है। राजकारोभार तथा व्यवहार रानी को संभालना पडता है। राजव्यवहार और कारोबर संभालने के लिए शासन के लोग मंत्री मंडल रानी की सहाय्यता नहीं करते तो षडयन्त्र रचाकर उसे राजसत्तासे हटाना चाहते है। पुरुष प्रधान संस्कृति होने के कारण स्त्री ने राज कारोबार संभालना यह किसी को भी ठिक नहीं लगता और स्त्री होने के कारण वह सभी समस्याओंका सामनाभी नहीं कर सकती। उसके साथ सभी होकर भी वह अकेली है। इस बात की लेखकने संकेत किया है।

"जयसन्धि" कहानी में सामन्त यशो विजय सब राजाओं के दर्प को भंग करके उनमें एक सूत्राता तथा केन्द्रीय सत्ता की स्थापना करना चाहता है लेकिन सीधी नीति और धर्म की बातो से ये राजा

लोग माननेवाले नहीं है उसके लिए शास्त्र उठानाही पडेगा लेकिन यशोविजय की पत्नी बसन्ततिलका यशोविजय से इस बात को रोकना चाहती है। वह कहती है केन्द्रीय सत्ता के लोभ से सामान्य जन को क्यों बरबाद करना चाहते हो ? उनके घर क्यों उजाडना चाहते हो ? बसन्त तिलका उसे रोक नहीं पा रही है। बसन्ततिलका यशोविजय की निष्पुत्रा पत्नी है। वह अपने पतिसे यह भी बताती है कि यह सब क्यों कर रहे हो ? क्यों कि बसन्ततिलका निष्पुत्रा है यह उसकी समस्या है।

"कालधर्म" कहानी में धर्माधिष्ठित शासन प्रणाली की समस्या को चित्रित किया है। धर्माधिष्ठित शासन प्रणालीमें ग्रंथो को अधिक महत्त्व दिया जाता है। शासन प्रणाली चलते रहती है परंतु इसी में राज्यशासन में जन कल्याण को महत्त्व नहीं दिया जाता तब जनता के सामने अपेने शासको के प्रति समस्या खडी हो जाती है। कहानी में राजा संन्यास लेना चाहता है लेकिन उसके बाद उत्तराधिकारी किसे चुना जाय यह भी एक समस्या है। राजा का पुत्र उत्तराधिकारी बन सकता है लेकिन शासन के निती नियमों की जानकारी न होने पर के कारण वह सभी बाते अपनी माँ से पूछता है माँ के सामने दो, दो समस्याएँ खडी हो जाती है एक तो अपने राज्य की जनता को संभालता है और दुसरी बात उत्तराधिकारी अपने पूत्र को ही बनाना है। शासन प्रणाली की समस्या को लेखकने प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है।

स्वातंत्र्य प्राप्तिके लिए दो दल काम कर रहे थे जिसमें सशस्त्र क्रांति करनेवाले और दुसरे अंहिंसा करते हुए अपना हक बताने वाले और स्वातंत्र्य के लिए काम करनेवाले। सशस्त्र क्रांतिकारक

हत्यारो के बलपर अधिक जोर था उसीके साथ-साथ अफसरों को हत्या करना, सरकार के दफ्तर जलाना, रेल के अन्दर बम फोडना आदि सारी बांते देशभर चलतीं रहतो थी।

अहिंसात्मक मार्ग से जाने वाले देशभक्तों को इनसे कभी जमी नहीं इसमेंसे जैनेन्द्रकुमारजी भी थे उनको हिंसा, आंदोलन, इस बांतोसे नफरत थी। सनदशीर तथा अहिंसात्मक आन्दोलन का मार्ग ही योग्य बताया। इसी प्रकार जैनेन्द्रके विचार होने के कारण उनके कहानियों में भी इसी प्रकार की विचारधारा का अंश मिलता है।

फाँसी, गदर के बाद, स्पर्धा, जनार्दन को रानी, जय-सन्धि, जनता, जनता में कालधर्म आदि कहानियों में राजनितिक समस्याएँ खडी हो गयी है और वह भी कहानियों के नायिका के सामने छुडाना जरूरी है। जैनेन्द्रकुमारजी ने कहानी को नायिकाओं के माध्यमसे बडी से बडी राजनितिक समस्याओंको सुलझाया है।

कहानी को नायिका हत्या, हिंसा, आदि बांतो को टालना चाहती है और साथ-साथ जनकल्याण को अपना सुख शांति मानती है। कभी कभी शासन प्रणाली नायिकाओं के खिलाफ षडयंत्र करते हैं नारी होने के कारण उनके षडयन्त्रो को वह पहचानती नहीं लेकिन जिस समय जानती है तब वह जनता शासन प्रणाली दोना का कल्यान चाहती है स्वयं को पोडा भुगतना पडे फिर भी वह पीछे नहीं हटती।

इसी प्रकार जैनेन्द्रने अपनी कहानियों में राजतितिक

समस्याओं के ओर संकेत किया है और उनको सुलझाया है।

५] जैनेन्द्रकुमार की कहानियों में समाज पीडित नारी की समस्याएँ :

अपने देश में पुरुष प्रधान संस्कृति होने के कारण स्त्रियों को व्दितीय स्थान दिया जाता है। अगर नारी स्वयं प्रेरणासे समाज में किसी दफतर में चुनाव में या सामाजिक कार्यों में आगे आनेको कोशिश करती है तब उसे हमारे देश की पुरुष प्रधान संस्कृति आगे आने नही देती हर समय अलग-अलग स्थानपर उसे विरोध हो जाता है। नारी पुरुष के लिए दासी के रूप में ही होती है। पुरुष अपनी वासना को बुझाने के लिए स्त्री को एक साधन के रूप में उपयोग करता है। पैसा और शोहरत के जोर पर स्त्री को जैसे चाहे वैसे नचा सकते है। समाज में जहाँ- जहाँ नारी है उसका यहीं हाल है।

विवाहित और अविवाहित दोनो नारीयोंका यहीं हाल होता है। विवाहीत नारी अपने परिवार का कवचार करके उसके पतिसे उसे जो पीडा भुगतनी पडती है वह चुपचाप भुगतती है। विवाह एक बन्धन होता है यह बात जानती है। परंतु कही विवाहित नारियाँ ऐसी होती है जिनको अपनी पति की पीडा सही नहीं जाती। अपनी पत्नी को केवल भोग्य वस्तु मानकर उससे व्यवहार करते हैं। मनुष्य को जीने के लिए तीन बातों की अवश्यकता होती है। अगर उसकी जरूरतें पुरी नहीं हुई तो उसे खुदके लिए प्रयत्न करना पडता है और समस्याओं से सामना करते जीना पडता है। समस्याओंका सामना करने-वाली सभी स्त्रियाँ नहीं होती। कुछ समस्याओंका सामना करती

है, तो कुछ खुदखुशी करके स्वयं मिट जाती हैं। लेकिन जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों की नायिकाएँ समस्याओंसे घाबराती नहीं तो उनसे मुकाबला करनेकी ढाहस उनमें है। कभी कभी विवाह के बंधानो को समाज के नियमों को अलग रखाकर जीना पडता है तब समाज क्या कहेगा यह सोचना यह एक बुझादोली होगी। अपनी वासना, तथा पेटी की आग मिटाने के लिए स्त्री किसी पुरूष का सहारा लेती है या तो मुक्त रूपसे भोगी बन जाती है। कभी कभी अपने मन की दमित भावनाओंको पुरा करने के लिए वह किसी अमीर पुरूष का सहारा लेती है और अपने मन की सभी मुरादे पुरी करती है उसे रखैल कहते हैं। अमीर पुरूष शादी शुदा हाता है फिर भी वह अपने रखैलकी सारी बांते पुरी करता है उसे सँभॉलता रहता है तब तक दोनों में प्रेम तथा स्नहे रहता है। लेकिन अगर किसी कारणवश दोनो में झागडे हो ता वह एक दुसरे से दूर हो जाते हैं।

इसी प्रकार की रखैल की समस्याको जैनेन्द्रकुमारजी ने "रेल में " इस कहानी में चित्राण किया है। "पर क्या आप समझाते है वह सुशीला है ? उसे मेरी फिकर है ? वह मेरी बाट देखाती होगी ? सच बात यह है। वह बडी कलहकारिणी है। पैसे के लिए उसे मेरी चाहना है। मैं पहुँच रहा हूँ किले, पैसा ले, अब तो वह मुझे पूछेगी।"[२१]

स्त्री का पैसों के लिए पुरूषोंसक संबधा रखाना बिना प्रेम बंधा से बंधाकर रहना पुरूष के पैसों पर अपना अधिकार रखाना यह सब वेश्यावृत्ति का ही उदाहरण है। पैसे नही मिलते तो वह अपने पतिसे, या बाहरी पुरूष से झागडे करती है। लेकिन इसी प्रकार

के आचरण से स्त्री का मूल्य कम हो जाता है। अपना परिवार पति, बच्चे, समाज आदि बातों को वह पर्वा नहीं करती सभी बातों को भूलकर सिर्फ उसे पैसों से प्यार होता है।

सभी परिवारो में इसी प्रकार की समस्या नहीं उभरती परंतु उसका पति अगर अपने परिवार के बारे में कुछ सोचता नही तबही उस स्त्री के सामने अपने परिवार का तथा अपना गुजारा किस प्रकार करें ? ऐसी समस्या खडी हो जाती है। जो जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने कहानियोंमें चित्रित की है।

एक पुरूष को छोडकर दुसरे पुरूष के पास जाना दुसरे से तिसरे पास जाना यह स्थिति कितनी दयनीय तथा निसत्व है ? तथा नारी का जो प्रदर्शन होता है वह समाज के लिए बहूत हानिकारक होता हैं।

पहले जमाने में नाच गाकर पुरूषों का मन लुभानेवाली नर्तकीयाँ थी, जो गाना गाकर और नाच करके अपना खर्च चला लेती थी। इसके साथ-साथ रखैल, वेश्या आदि प्रकार भी प्रचलीत थे और आज भी है परंतु इससे भी समाज में एक नया नाम प्रचलित हुआ है जिसे कॉलगर्ल कहते है। बडे-बडे शहरों में अतिथी गृह होते है वहाँ पर कॉलगर्ल रखी जाती है पुरूष के इच्छा नुसार अलग अलग उम्र की और नाप कीलडकीयों को बुलाया जाता है। इसी समस्या की ओर भी जैनेन्द्रकुमारजी ने 'विज्ञान' इस कहानी में चित्रित किया है।

" तुमने हमारे मिशन को समझा है। वस्तुओं के क्षेत्र

में विज्ञान चलता है। व्यवहार के क्षेत्र में हम भावना को चलाना चाहते हैं। हमारा मिशन यह है कि वहाँ भी हम विज्ञान को चलायेंगे विज्ञान का शब्द अनासक्ति है। प्रेम में आसक्ति है, इसीलिए विज्ञान अप्रेम है। मूल अप्रेम में जो उपयोगवादी औपचारि कुशलता निकल सकती है, उतना ही मेरा आशय है।"३३

इसी प्रकार के मिशन अलग अलग देशोंमें युवतियों को भेजने का काम करता है। पुरूषोंकी रुचि के अनुसार स्त्री की उम्र, यौवन, और देह के नाप आदि बातों की जाँच पडताल मिशन करता है, और उनको उस देश में बेचता है। कुमारियों की परिक्षा के लिए यंत्रों की सहायता ली जाती है "इस संक्षिप्त चर्चा के अनन्तर उन चारों कुमारियों को एक साथी कक्षमें बुलाया गया और विधिवत देह परीक्षा के बाद सब को सफल घोषित करके उन्हें जाने और प्रतिक्षा में रहने का कह दिया गया।"३४

स्त्री का कौमार्य भंग हो गया है या नहीं यह देखने के लिए मशीनों का उपयोग किया जाता है। युवतीसे कौमार्य के बार में पूछा तो वह कहती नहीं। लेकिन मिशन का सेक्रेटरी यह बात मानता नहीं। वह कहता है " नहीं कहनेसे नहीं चलेगा यंत्र के आगे तुम्हें आगे तुम्हें कैसे सच माना जाता है।"३५

आनेवाला विज्ञान युग स्त्रियों के लिए कितना हानीकारक हो सकता है तथा दो वक्त की रोटी कमाने के लिए स्त्री को क्या क्या करना पड़ता इस समस्या का चित्रण लेखकने किया है। विज्ञान के आगे प्रेम, भावना मन, तथा शरीर का कोई मूल्य नहीं है। लेखकने इस बात की ओर भी संकेत किया है।

"बिखरी हुई कहानी" में लेखकने यह बताया है कि स्त्री को केवल पैसा कमाना यह उद्देश्य नहीं रखना चाहिए क्यों कि पूरा परिवार उसके इर्द-गिर्द रहता है। इस कहानी में डॉ.सेन से भाभी ने प्रेम किया था और अभी भी वह प्रेम करती है। डॉ.सेन को फोन करके वह बुला लेती है। पैसों को माँग करता है तब सेन पैसे लेकर भाभी पास चला जाता है। जुम्मन बागका एक आदमी वहाँ बैठा है जिसे डॉ. सेन बाहर भिजवाना चाहते है, तब भाभी कहती है "वह क्यों जाएँ ? इसलिए कि तुम रोब जमाओ और हमें बे इज्जत करो। यह मत समझलेना कि कोई हमारा रखवाला नहीं है। "

डॉ.सेन की भाभी लेकिन वह भाभी नहीं है वह प्रेयसी की तरह सभी व्यवहार करती है। पैसा कमाने के लिए विविध पुरुषों से संबध रखाती है। उसके जीवन का उद्देश्य सिर्फ पैसे कमाना है।

पैसे कमाने के लिए नीति अनीति, रिश्तों का खयाल न रखकर अनेक पुरुषों के साथ संबध रखकर स्त्री अपने व्यक्तित्व को खो देती है। स्वयं ही रांड कहकर अपना परिचय करा देती है। "स्त्री का इस प्रकार के व्यक्तिगत विघटन के कारण समाज में जो समस्यायें निर्माण होती है वह हमारी सामाजिक मान्यताओंसे बिलकुल विसंगत तथा आयोग्य जान पडती है। पुरुष को अपने सौंदर्य जाल में मोहित करके उससे पैसे ठगना, चोर लुटेरे जैसा ही काम है। स्त्री के पास जो सुन्दरता का सामर्थ्य दिया हुआ है। उसका उपयोग किसी को ठगने के लिए वह करें यह गलत है। इसीलिए वह समस्या है।"[६६] स्त्री, स्त्रीकाही द्वेष करती है, इस बात को और भी लेखकने प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है।

शराब पीना समाज को एक बुरी आदत है। जिसक पीने से व्यक्ति अपना सब कुछ खो बैठता है । शराब के कारण उसका सारा परिवार तित्र-बितर हो जाता है और शराब धिर-धिरे शराबी का शरीर कुरेदने लगती है। शराबी का स्वास्थ्य बिघडता है और साथ-साथ बाल बच्चे, पत्नि, घर सभी उजड जाते है। परिवार का खयाल रखनेवाली पत्नी होती है। परंतु परिवार को संभालना पुरूष का कर्तव्य होता है। वह अगर कुछ काम न करे, परिवारका खर्च न दे तों पत्नी क्या करेंगी ? इसी प्रकार की समस्या को जैनेन्द्र-कुमारने "प्रियव्रत" इ स कहानी में प्रस्तुत किया है । प्रियव्रति जो कवि है, सह संपादक है, मतलब एक बुध्दिमान व्यक्ति है। परन्तु शराब पीने के आदत उसे बिघाड देती है और वह निकम्मा बन जाता है।

दया कहती है " मैं आपके हाथ जोडती हूँ उनकी शराब छुडवा दीजिए।" शराबके कारण प्रियव्रत का पूरा परिवार तबाह हो जाता है उसकी सेवाकरनेवाली दया पर वह झूठे-झूठे आरोप लगाता है, दया को वह कहता है "वह दुराचारिणी है।"[27]

शराब के कारण परिवार नष्ट हो जाते है। नारी के सामने शराब भी एक ज्वलंत समस्या है जिसके कारण स्त्री का सब कुछ उजड जाता है। इस समस्या की ओर लेखकने संकेत किया है।

शराब को शराबी पहले पीने लगता है। बाद में शराब शराबी को पीने लगती है। शराब के कारण ही अच्छे अच्छे घर तबाह हो चुके है। शराब की धून में अपनी बीवी बच्चे तक बेचने के लिए शराबी तैय्यार हो जाते हैं। इसी प्रकार की समस्या के ओर

संकेत करते हुए लेखकने "व्यतीत" इस कहानी में इस समस्या को गांभीर्य से चित्रित किया है।

कलुआ एक मजदूर आदमी है जिसे हरदिन ताडी पीने की आदत है। ताडी पीने के लिए वह किसीभी हालात में जाता है और कुछ न कुछ करके पैसे इकट्ठा करता है। कभी-कभी उसके पास पैसे नहीं होते तब घर की चीजों के साथ-साथ अपनी लडकी को वेश्या व्यवसाय में लगाता है लेकिन बुधिया अपना शरिर किसी पर पुरुष के हाथों देनेसे इन्कार करती है तब उसे बहुत पीटता है। शराब पी-पीकर कलुआ अपने परिवार के साथ बिल्कुल अमानवीय व्यवहार करता है। अपने परिवार के प्रति उसके मन में थोडा सा भी प्रेम नहीं है इसका प्रमुख कारण है शराब।

कहानी में एक कलुआ है लेकिन समाज में हजारो कलुआ है उनका तथा उनके परिवार का क्या होगा ? शराब के कारण अस्त व्यस्त हुए परिवार का चित्रण करके जैनेन्द्र ने बहुत बडी और भयानक समस्या को अपने कहानियों में चित्रित किया है।

गांधी दर्शनपर निबंध लिखने वाला आदमी जब शराबसे नहाने लगता है, तब उसे समाज क्या कहेगा ? और उसकी पत्नी क्या कहेगी और करेगी ? उसके विचारों को तथा शराब की लत ही बदल सकता है ? वागीश एक प्रतिथ यश लेखक था। लेकिन उसे शराब की लत लगने से वह सच्चाई का रास्ता भटक गया है "उसका लिखना भाड में गया, शोहरत का खयाल और लौकिक कर्तव्यों की चिन्ता चूल्हे में पड गयी। बस, शराब की मात्रा उसकी बढती जाने लगी।"[७८]

जैनेन्द्र कुमारजीने चालीस रूपये, इस कहानी में शराब के लतसे अस्त, व्यस्त होनेवाला परिवार, इज्जत, प्रतिष्ठा सभी नष्ट हो जाते हैं उसे कोई इज्जत नहीं देता। इस कहानी में वागीश को कहानी लिखाने के लिए चालीस रूपये दि गये थे, लेकिन वागीश वक्तपर कहानी न देने के कारण प्रकाशक उसे नोटिस देता है। शराब के कारण वागीश को ऐसी दुरावस्था होती है। इस समस्याकी ओर जैनेन्द्रने संकेत किया है। वागीश को इस हालात से उसके घरवालों पर क्या गुजरती होंगी ? उसके पत्नीपर क्या गुरजती होगी ? इस बात की ओर भी लेखकने संकेत किया है।

"वहरानी" कहानी में लेखकने गृहस्थी के जिम्मेदार व्यक्ति जब मर जाता है, तब उसके विधवा पत्नी को समाज बहुत पीडा देता है। तब उसकी गृहस्थी की कठीन अवस्था हो जाती है। अपने परिवार का पालन-पोषण करनेवालाही जब निकलकर चला जाता है तब पूरे परिवार का पालन-पोषण करनेकी जिम्मेदारी उसपर आ गिरती है। पति के दफ्तर में नौकरी करना चाहती है लेकिन उसे नौकरी दी नहीं जाती पढी लिखी न हो ने के कारण वह और कुछ नहीं कर सकती अपने और परिवार के गुजारिश के लिए वह भीख माँगती है।

सरकारी दफ्तरों की कार्यवाही में लोगों को आने-जाने में जान चली जाती है। लेकिन कोई काम वक्तपर नहीं होता, घर अस्त-व्यस्त हो जाते हैं इस समस्या की ओर ध्यान देकर सरकारी दफ्तरों में परिवर्तन होना चाहिए इस बात को भी दर्शाया है।

विधवा समस्या

चोरी करना कानुनी तौर पर अपराध माना है। समाज भी इस बात का समर्थन नहीं करेगा। किसी को चीज बिना इजाजत के लेना अपराधाह होगा। लेकिन आर्थिक अभाव के कारण अगर अपनी आवश्यकताओं को पूरी नहीं होती तब ही मनुष्य चोरी करना सिखाता है, और धिरे-धिरे उसे इसकी आदत हो जाती है।

इसमें फिर वह पुरुष हो या स्त्री हो। इसी समस्या को जैनेन्द्रकुमारजीने सजा इस कहानी में प्रस्तुत किया है। चोरी कहानीमें मिसरानी विधवा है, आर्थिक समस्या से वह पीडित है क्यों कि उसका लडका सातवी पास होकर आठवी में चला गया है उसकी किताबे खारीदने के लिए पैसों की जरुरत है इसलिए वह चोरी कर देती है। एक तो उसका पति मर चुका है, और दुसरा सहाय्यता करनेवाला कोई नहीं है इस कारण वह चोरी करती है।

विधवा होना कोई अपराध नहीं है, पति के मृत्यु के बाद उसकी पत्नि विधवा हो जाती है। किसी बिमारी के कारण पतिकी मृत्यू हुई होंगी तो इसमें पत्नी का क्या दोष ? फिर भी समाज पत्नी को ही दोषी बनायेंगा, खुलेआम उसकी बेइज्जती करेंगें।

स्वातंत्र्यापूर्व स्त्री का विवाह झूले में ही होता था, उसे यह मालूम नहीं होता था को अपना पति कौन है ? " व गवारा" कहानी में भी एक ऐसी ही नारी की व्यथा है जो वह चुपचाप सहती है क्यों कि पुनिया विधवा है। ऐसी विधवा का पुनर्विवाह होना

जरूरी है या तो सरकार की ओर से आर्थिक सहाय मिलना जरूरी है।

"क्या हो ?" कहानी में सुषमा एक अनपढ स्त्री है इसका पति क्रांतिकारी है जुर्म करने के कारण उसे फाँसी हो जाती है वह अपने परिवार के सभी सदस्योंको जेल में मिलने के लिए कहता है और अपनी पत्नीसे कहता है अपने छोटे भाई से विवाह कर, सुषमा विधवा रहना पसंद करती है लेकिन अपने देवर से शादी करना पसंद नहीं करती।

कुमारी माता की समस्या

प्रस्तुत कहानी में लेखकने "कुमारी माता की समस्या की ओर संकेत किया है। "दिल्ल में" कहानी में राधीया का बच्चा करूणा पालने के लिए देती है परंतु वह अपने बच्चे के सिवा रह नहीं सकती, अपने बच्चे को देखने के लिए वह नौकरानी के रूप में वहाँ तक जाकर पहूँचती है, जहाँ उसका बच्चा होता है। कुमारी माता होने के कारण समाज उसका स्विकार नहीं करेगा इस बात से वह डरती है और बच्चे को छोड देती है, बच्चा लेनेवाला जहाँ जाता है वहाँ जाकर पहूँचती है और अन्त में आत्महत्या कर लेती है।

"निस्तार" कहानी में भी लेखकने "कुमारी माता" की समस्या की ओर संकेत किया है। कहानी की नायिका पुष्पा को महिने चढे है, वह गर्भवती है, लेकिन विवाह न होने के कारण वह छिपाना चाहती है और आत्महत्या कर लेना चाहती है परंतु माता प्रसाद इस बात को जान जाते हैं और अपने लडके से सगाई कराते हैं।

"परदेसी" कहानी में नायिका पहले ही मुलाकात में नायक को सर्वस्व दे बैठती है और बाद में पश्चाताप करती है। वह अपने बच्चे को लेकर परदेसी नायक का इंतजार करते अपनी उम्र बिताती है परंतु उसका परदेसी नायक कभीभी वापस नहीं आता। लेखकने इस कहानी में भी कुमारी माता की समस्याको प्रस्तुत किया है।

बच्चा न होने पर समस्या

"तमाशा" कहानी मे नायक और नायिका दोनो विवाहित होने पर भी बहुत साल बीतते हैं लेकिन उनके घर बच्चा पैदा नहीं होता। बच्चे की प्रतिमा बनाकर उससे प्या करते हैं झूले में बिठाकर गाने गाते है, बहुत सारे खिलौने लाकर उस प्रतिमा को खिलाने का का प्रयत्न करते हैं परंतु उनके घर बच्चा पैदा नहीं होता अंत में बच्चे के कारण नायक पागल हो जाता है। नायिका सुनयना के दिलपर क्या गुजरती होंगी ? इस समस्या की ओर लेखकने संकेत किया है।

बच्चों के भविष्य की समस्या

अपना-पराया कहानी में फौजी अपना परिवार छोडकर चला जाता है। फौजी की पत्नी अपने बच्चों का पालन पोषण करती है और पति का इंतजार करती है परंतु उसका पति वापस नहीं आता। अचानक रेल के सफर में भेट हो जाती हैं लेकिन पिता अपने बच्चों को पहचानता नहीं।

बच्चों का पालन-पोषण नारी को ही करना पडता है इस की ओर लेखकने संकेत किया है।

अपने देशमें पुरूष प्रधान संस्कृति है। फिरभी परिवार का पूरा ध्यान रखानेवाली स्त्री होती है। अपना अपने बच्चों तथा पति का खयाल वह स्वयं रखाती है, सभी के सुख दु:ख में वह हिस्सा लेती है और अपने परिवार के कल्याण की चिंता करती है। परंतु उसके परिवार के सदस्य अगर ठिक होंगे तबही यह सब हो सकता है। सभी जगह यह देखाने नहीं मिलता।

सभी के घरोंमें अगर सुख शांति होती तो किसी भी प्रकार की समस्या जन्म न लेती। मनुष्य का अपना निजि एक विश्व होता है, उसकी कुछ आशा आकांक्षाएँ होती है परंतु उसकी सभी आशा आकांक्षाएँ पूर्ण नहीं होती उसमें नारी का दुय्यमस्थान है इसी कारण वह स्वयं निर्णय नहीं ले सकरती उसे अपने पिता, ससुर, पति, देवर जिठानी आदिसे पूछना पड़ता है, समझाना पडता है, कभी-कभी परिवार के सदस्य अपने बहूसे ठिक व्यवहार करतें है तो कभी घृणास्पद फिर भी घर की बहू होने के कारण वह सभी बातें सहती है और जीवन बिताती है। विवाह के बाद नारी का सर्वस्व उसका पति होता है पति अगर ठीकसे रहे अपने परिवार का पालन पोषण करें तो समस्या उत्पन्न होगी ही नही परंतु अपने परिवार का अच्छा-बुरा सोचना बंद करे नजर अंदाज करें तो धीरे-धीरे पारिवारिक समस्याएं जन्म लेने लगती है। और पूरा परिवार अस्त-व्यस्त हो जाता है। परिवार के सदस्य सभी एक दुसरे से अच्छे ढंगसे पेश आयेंगे तो कोई भी समस्या उत्पन्न नहीं होगी लेकिन ऐसा नही होता और इसका मूल कारण परिवार का पुरूष।

जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों में स्त्री के सामने जो समस्याएँ खडी हो जाती है उनका मूल कारण पुरूष है। उसके अविवेकता के कारण नारी को अनेक पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पडता है।

मनुष्य को जीने के लिए रोटी, कपडा और मकान की जरूरत होती है लेकिन इन तीन चीजों को खारीदने के लिए अर्थ की जरूरत होती है। अर्थ मनुष्य जीवन का मूलाधार है। समाजमें बहुत सारी समस्याएँ अर्थको लेकरही होती है। जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने कहानियों में आर्थिक समस्याओं का भी चित्राण किया है। घार की आर्थिक स्थिति ठिक नह हो तो घार की नारी के सामने अनेक समस्याएँ खाडी हो जाती है, क्योंकि परिवार का पालनपोषाण करने कि जिम्मेदारी पत्नीपनर होती है।

मध्यवर्ग के लोंगो में जरूरतें अधिक और अर्थ कम होता है उन जरूरतों को मिटाने कें लिए दिन रात मेहनत करना पडता है, शारिरीक मष्टों को उठाना पड़ता है फिरभी उनकी आर्थिक समस्याएँ खात्म नहीं होती और मानसिक तनाव बढता जाता है।

जैनेन्द्रकुमारजी की ऐसी अनेक कहानियाँ है जिन में आर्थिक समस्याओं कि ओर संकेत किया है।

जिससे प्यार होता है, उससे विवाह नहीं होता, जिससे विवाह होता है उसे के प्रति मन में प्रेम नहीं होता। विवाह भी होता है ऐसे आदमी से कि पति-पत्नी की उम्र में बहुत फर्क होता है इसी कारण दोनो में प्रेम नहीं होता। पत्निको सिर्फ सोने के अलंकार देकर प्रेम जताने वाले भी कुछ पति है, लेकिन पत्नी के अंतर्मन को जानकर प्रेम करने वाले पति कम है इसकारण पत्नी के मन कुठन और घुटन निर्माण हो जाती है। उसके मन में नये विचार आने लगते है कि कोई उन्हे तनमन से चाहनेवाला मिले। पत्नि पतिसे प्रेम नहीं करती इस कारण वह रखैल या कॉलगर्ल जैसी लडकीयों के साथ यौन संबन्ध रखाता है। इसी प्रकार की अनेक यौन समस्याओं को जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने कहानियों में प्रस्तुत किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने कहानियों में राजनितिक समस्याएँ भी चित्रित की है। राजनीतिमें स्त्रीयों का सहभाग कम होता है। परंतु राजनिति के कारण स्त्रीयों के सामने अनेक समस्याएँ खडी हो जाती है इसकी ओर भी लेखकनें संकेत किया है।

व्यक्ति समाज छोडकर रह नहीं सकता क्योंकि व्यक्ति व्यक्ति से ही समाज बन जाता है। जो व्यक्ति को समस्या वही समाज की समस्या होती है। समाज बहुत बडा होता है, और उसमें अनेक समस्यायें जन्म लेती है। चोरी करना भी एक समस्या है, वेश्या व्यवसाय करना रखैल रहना या कॉलगर्ल बनकर अपने शरिर को बेचना आदि सामाजिक समस्याएँ हो सकती है। जैनेन्द्रने नारी का इन समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

पति को मृत्यू होने के बाद उसकी पत्नि विधवा बन जाती है इसमें नारी का कोई दोष नहीं होता, परंतु समाज चुपचाप नहीं रहता। पति की मृत्यू का कारण उसकी पत्नी है ऐसे आरोप-प्रत्यारोप लगाकर नारी को बदनाम किया जाता है।

पुरुष अपनी धन-दौलत के मोह में फँसा कर नारी को फाँसता है और नारी की इज्जत लुटनेपर उसे छोड देता है। कुछ दिनों के बाद वह माँ बननेवाली है। सुंदरसा बच्चा जन्म लेने वाला है, इस बातसे वह आनंदित हो जाती है और उसपर हुए अत्याचार तथा अपमान को भूलकर वह बच्चे को संभालती है। इसी प्रकार की समस्याएँ भी जैनेन्द्रकुमार की कहानियों में मिलती है।

जैनेन्द्रने नारी के साथ-साथ उनके बच्चों को लेकर भी अनेक समस्याओं को चित्रित किया है। बच्चा न होने पर भी माता-पिता कितने परेशान होते है तो बच्चें होनेपर उनका पालन पोषण

किस प्रकार किया जाए आदि अनेक समस्याओं का चित्राण जैनेन्द्र की कहानियों में मिलता है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने कहानियों में पारिवारिक, यौन, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, विधवा, कुमारी माता, बच्चों की समस्या इसीप्रकार की अनेक समस्याओं से नारी को जुझाना पड़ता है यह बताया है।

चतुर्थ अध्याय

संदर्भ

१] जैनेन्द्रकुमार की कहानिया : प्रथम भाग- रानीमहामाया पृ.क्र.१८०

२] जैनेन्द्रकुमार की कहानिया : भाग २ पृ.क्र. १५

३] जैनेन्द्रकुमार कह कहानिया : भाग २ पृ.क्र. १७

४] डॉ. देवराज उपाध्याय : आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान पृ.क्र.८१/८२

५] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : दसवा भाग पृ.क्र.३३

६] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : दसवा भाग कामनापूर्ति पृ.क्र.१४४

७] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग ६ इक्केमें पृ.क्र.४३

८] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग २ अपना पराया पृ.क्र.११६

९] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग ६ एकगो पृ.क्र.१५५

१०] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग २ किसका रूपया पृ.क्र.७७

११] डॉ. गायकवाड. सुरेश : जैनेन्द्र के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएँ पृ.१८०

१२] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग ४ रेल में पृ.क्र.५३

१३] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग ९ विज्ञान पृ.क्र.८६

१४] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग ९ विज्ञान पृ.क्र.८६

१५] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग ९ विज्ञान पृ.क्र.८६

१६] डॉ. गायकवाड सुरेश : जैनेन्द्र के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएँ पृ.क्र. २६६

१७] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग ६ प्रियवत पृ.क्र.८६-८७

१८] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग ७ चालोस रूपये पृ.क्र.१७५